सांस्कृतिक सापेक्षतावाद की जरूरतः प्रो. नदीम हसनैन

वर्धा। देश के जाने-माने समाज विज्ञानी प्रो. नदीम हसनैन ने कहा है कि किसी समुदाय, क्षेत्र, जाति या धर्म के लिए स्टीरियो टाइप पहचान बनाना भारत के एकीकरण के लिए खतरनाक है। प्रो. हसनैन महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में 'जातीय समाजों का भाईचाराः विशेष संदर्भ-पूर्वोत्तर' पर आयोजित संगोष्ठी में बीज भाषण कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ताकतवर प्रचार माध्यमों में मुसलमानों और दक्षिण भारतीयों के बारे में जो स्टीरियो टाइप पहचान बना दी गई है, उसी तरह का बिंब पूर्वोत्तर के बारे में हमारे मानस में बना दिया दिया गया है। इस चुनौती का मुकाबला हम सांस्कृतिक सापेक्षतावाद से ही कर सकते हैं जिसमें दूसरी संस्कृति की वैधता को खारिज नहीं किया जाता। उन्होंने कहा किदूसरे समुदाय, क्षेत्र, जाति या धर्म के बारे में पूर्वाग्रहों से तैयार किए गए सांचे में ढाल कर सोचने का बढ़ता चलन जातीय समाज के भाईचारे को बेतरह प्रभावित कर रहा है। दूसरे धर्म, जाति, समुदाय की अपेक्षा खुद को श्रेष्ठ मानने की सोच जहां निरंतर बढ़ रही है वहीं इसे रोकने के प्रयास काफी कम हैं। प्रो. हसनैन ने कहा और तो और, देश की राजधानी दिल्ली तक में पूर्वोत्तर के लोगों के साथ ज्यादतियां हो रही हैं। पुलिस उन्हें संदेह की दृष्टि देखती है। उन्हें अक्सर अपने ही देश में विदेशी समझ लिया जाता है। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर के साथ देश के अन्य हिस्सों के लोगों की नजदीकी बढ़ाने के ठोस प्रयास करने होंगे। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए फिल्म डिवीजन के निदेशक तथा सुपरिचित फिल्मकार जोशी जोसेफ ने कहा कि पूर्वोत्तर की जनजातियों और वहां के समाज में अनेक सांस्कृतिक विशिष्टताएं हैं, जिसके बारे में बाकी देश के लोगों को जानकारी ही नहीं है। संगोष्ठी को बांग्ला लेखक जयजीत घोष, भोजपुरी लेखक हरेंद्र पांडेय, कवि-कथाकार सेराज खान बातिश, उर्दू की लेखिका डा. जरीना जर्री, मानवाधिकार कार्यकर्ता तथा फिल्मकार शाहनवाज आलम ने भी संबोधित किया। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए बांग्ला के वरिष्ठ साहित्यकार नवारुण भट्टाचार्य ने पूर्वोत्तर के सामाजिक-सांस्कृतिक वैशिदूष्टय की उपेक्षा को दुर्भाग्यपूर्ण बताया। संगोष्ठी के दूसरे सत्र में प्रो. नदीम हसनैन से संवाद का कार्यक्रम रखा गया। प्रो. हसनैन ने कहा कि समूहों में संवादहीनता कायम रहने से ही सांस्कृतिक परिवर्तन शुष्क और शिथिल हुआ है। कार्यक्रम की शुरुआत युवा रंगकर्मी तथा अनुवादक सुशील कांति के कबीर के पद 'साधो ये मुर्दों का गांव' के गायन से हुई। आखिर में विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर तथा कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

This document was created using Smart PDF Creator
To remove this message purchase the product at www.smartPDFcreator.com

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए प्रो. नदीम हसनैन। उनके दाएं जयजीत घोष, नवारुण भट्टाचार्य, कृपाशंकर चौबे और सेराज खान बातिश।

This document was created using Smart PDF Creator
To remove this message purchase the product at www.SmartPDFCreator.com